विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2557, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 17 दिसंबर, 2013 वर्ष 43 अंक 6

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

वाचानुरक्खी मनसा सुसंवुतो, कायेन च नाकुसलं कयिरा।
एते तयो कम्मपथे विसोधये, आराधये मग्गमिसिप्पवेदितं॥

धम्मपद- २८१, मग्गवग्गो.

वाणी को संयत रखे, मन को संयत रखे और शरीर से कोई अकुशल (काम) न करे। इन तीनों कर्मपथों (कर्मेंद्रियों) का विशोधन करे। ऋषि (बुद्ध) के बताये (अष्टांगिक) मार्ग का अनुसरण करे।

आंतरिक शांति के धर्मदूत : श्री सत्यनारायण गोयन्का

(पिछले अंक से क्रमश... -२-)

स्वर्णिम वर्ष ...

श्री गोयन्काजी को भारत आने का अवसर १९६९ में प्राप्त हुआ। उनके माता-पिता पहले ही भारत आ गये थे और वहां उनकी माताजी बीमार पड़ गयी थी। सरकार श्री गोयन्काजी को भारत जाकर बीमार मां को देखने की अनुमति देने के लिए तैयार थी।

भारत की यात्रा आरंभ करने के पूर्व सयाजी ऊ बा खिन ने उन्हें विधिवत विपश्यना का आचार्य नियुक्त किया। म्यंमा में भारतीयों के लिए दो ऐसे शिविर लगे, जिनमें सयाजी के सान्निध्य में श्री गोयन्काजी ने शिविरों का संचालन किया। वहां शिविर की वैसी ही जगह चुनी गयी, जैसी कि उन्हें भारत में मिलने वाली थी। मांडले शहर के बाजार में छत के ऊपर एक शिविर लगा, जो दो सिनेमाघरों के बीच में था। वहां फिल्मी गीत ऊंची आवाज में बजते रहते थे। निवास के नाम पर बांस की चटाइयों से बनी झुग्गियां थीं। लेकिन साधक इससे रंचमात्र भी विचलित नहीं हुए और श्री गोयन्काजी को अपने आचार्य के सान्निध्य में ऐसा विपश्यना शिविर संचालित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पहली बार सयाजी के बगल में बैठ कर श्री गोयन्काजी ने इस प्रकार के प्रवचन दिये, जिनके कारण वे बहुत लोकप्रिय हो गए। शिविर में चूंकि सभी साधक भारतीय थे, इसलिए श्री गोयन्काजी ने प्रवचन हिंदी में दिये। सयाजी हिंदी समझ लेते थे, परंतु बोल नहीं पाते थे। अक्सर वे झुक कर श्री गोयन्काजी के कान में फुसफुसाया करते यथा – अब इन्हें बुद्ध के कुछ शिष्यों के बारे में बताओ, माता विशाखा के बारे में कहो, अंगुलिमाल के बारे में कहो आदि। और श्री गोयन्काजी अपना कहना छोड़ कर सयाजी के निर्देशानुसार प्रवचन देने लगते। बाद में वे कहते कि प्रवचन देना उनके लिए वैसे ही स्वाभाविक हो गया था, जैसे पानी का नल खोल देना। बिना किसी प्रयास के ही मुँह से धाराप्रवाह शब्दों की झड़ी निकल पड़ती थी।

भारत में

जून १९६९ में श्री गोयन्काजी यांगो से कलकत्ता (भारत) हवाई जहाज से आये। आचार्य सयाजी से जब विदा ले रहे थे तब सयाजी ने उनसे कहा था "तुम अकेले नहीं जा रहे हो, मैं जा रहा हूं और धर्म जा रहा है।" सयाजी ऊ बा खिन स्वयं म्यंमा छोड़ नहीं सकते थे लेकिन वे अपने प्रिय शिष्य को धर्मदूत की तरह अपने प्रतिनिधि के रूप मे भेज रहे थे।

(श्री सत्यनारायण गोयन्का, जनवरी ३०, १९२४ -- सितंबर २९, २०१४)

श्री गोयन्काजी को इस बात की जानकारी थी कि यह एक ऐतिहासिक क्षण है, फिर भी उनके मन में यही विचार चल रहा था कि भारत में उनका रहना कुछ दिनों के लिए ही होगा और शीघ्र ही वे अपनी प्यारी मातृभूमि तथा आदरणीय आचार्य के पास आ जायँगे। लेकिन सच तो यह है कि वे दो दशक बाद ही म्यमां लौट सके।

वे उस देश में आये जहां उनको बहुत कम लोग जानते थे और भगवान बुद्ध की शिक्षा को हेय दृष्टि से देखते थे। 'विपश्यना' शब्द ही लोग भूल गये थे। लेकिन अपने परिवार के सहयोग से श्री गोयन्काजी शीघ्र ही मुंबई में प्रथम दस-दिवसीय शिविर लगाने में सफल हुए। इसमें भाग लेने वालों में उनके माता-पिता, कुछ अन्य लोग और फ्रांस की एक महिला थी। शिविर के अंतिम दिन उस महिला ने श्री गोयन्का जी को अपने देश आने का निमंत्रण दिया। श्री गोयन्काजी ने उसे दस वर्ष बाद निमंत्रित करने के लिए कहा।

एक शिविर से दूसरा, फिर तीसरा यों धर्मचक्र अपनी जन्मभूमि में पुनः घूमने लगा। वे समझ गये कि अभी म्यंमा लौटने के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। यहां के लोग विपश्यना विधि को सीखने के लिए बड़े उत्सुक थे। धर्मदूत भला इसे कैसे अस्वीकार कर सकते थे!

श्री गोयन्काजी देश में एक छोर से दूसरे छोर तक ठसाठस भरी भारतीय रेल में, तृतीय श्रेणी में यात्रा कर लेते थे। कोई पुराना

साधक तो था नहीं जो उनकी सहायता करता। इसलिए वे जहां कहीं शिविर लगाने जाते वहां की व्यवस्था का भी ध्यान रखते। भोजन के समय साधकों के साथ बैठ कर भोजन भी कर लेते। अनेक स्थानों पर शामियाना ही ध्यान-कक्ष का काम करता। राजगीर में एक रात शामियाना आंधी से उड़ गया। लेकिन दूसरे दिन सबेरे श्री गोयन्काजी अपनी धम्मसीट पर विराजमान थे और साधकों को उत्साहित करने के लिए प्रातःकालीन दैनिक वंदना (चांटिंग) कर रहे थे।

हालात बड़े खराब थे। उनके पास पैसे भी कम थे और सहारा भी कम था। कुछ समय तक वे अकेले थे क्योंकि उनकी पत्नी श्रीमती इलायची देवी (साधक उन्हें 'माताजी' संबोधित करते हैं) म्यंमा में रह गयी थीं। फिर भी वे खुश नजर आते थे, क्योंकि वे वही काम कर रहे थे जिसके लिए पैदा हुए थे।

उन प्रारंभिक वर्षों में वे केवल हिंदी के माध्यम से विपश्यना सिखाते थे। अंग्रेजी जानते थे लेकिन उतनी ही जितनी कि उनके व्यापार आदि के लिए आवश्यक थी। वे सोचते थे कि अंग्रेजी भाषा पर उनका अधिकार उतना नहीं है जितना विपश्यना सिखाने के लिए आवश्यक है। लेकिन जैसे-जैसे उनकी प्रसिद्धि बढ़ी, विदेशी साधक उनसे साधना सीखने और प्रवचन देने की मांग करने लगे।

६० के दशक के अंत में तथा ७० के दशक के प्रारंभ में पश्चिमी देशों के बहुत से लोग भारत आये। उन्हें किसी ऐसी अनोखी चीज (अध्यात्म की) खोज थी जिसके बारे में वे स्वयं नहीं जानते थे।

उनमें से कुछ लोगों ने श्री गोयन्काजी से शिविर में बैठने का अनुरोध किया, लेकिन श्री गोयन्काजी ने अपनी भाषा सं बंधी कठिनाई उनके सामने रखी। बिना हतोत्साहित हुए साधकों ने बर्मा सयाजी ऊ बा खिन को पत्र लिखा। शीघ्र ही सयाजी का यांगों से एक संदेश आया, जिसमें श्री गोयन्काजी को इन्हें लेने और अंग्रेजी माध्यम से शिविर संचालन करने का आदेश था। सदा की भांति श्री गोयन्काजी ने अपने आचार्य के आदेश का पालन किया।

अंग्रेजी माध्यम से संचालित पहला शिविर १९७० में डलहौजी में लगा। डलहौजी हिमालय में एक पहाड़ी सैरगाह है। वहां और फिर बोधगया में, जहां बुद्ध को संबोधि प्राप्त हुयी थी, पश्चिमी देशों से आये साधकों का श्री गोयन्काजी के पास आने का अनवरत तांता लग गया। उनमें से कुछ तो आधे नंगे रहते थे और हिन्दू संन्यासियों की तरह लंबे बालों का जटा-जूट बना रखा था। कुछ अन्य वैसी पोशाक पहने थे जैसी सैलानी लोग उस समय पहनते हैं जब वे समुद्र के किनारे सैर के लिए जाते हैं। अधिकतर पुरुषों की दाढ़ी बढ़ी थी और अधिकतर महिलाओं के बाल पीठ पर लहराते रहते थे। चूंकि वे लोग जूड़ा नहीं बनाती थीं, जैसे कि भारतीय महिलाएं बाल संवार कर बनाती हैं। फिर भी उनके अस्त व्यस्त चेहरे से श्री गोयन्काजी पर कोई फर्क नहीं पड़ा। जो भी उनके पास आया उन्होंने सबों को धर्म बांटा। कुछ ने दस-दिवसीय शिविर किये और फिर कभी नहीं दिखाई पड़े। कुछ अन्य जहां जिस देश में भी श्री गोयन्काजी जाते, वहां जाकर उनका शिविर करते। उनमें से कुछ लोग वैसे थे जो बाद में भिन्न-भिन्न परंपराओं से जुड़ कर बड़े प्रसिद्ध हुए। कुछ ऐसे हैं जिन्हें श्री गोयन्काजी ने विपश्यना का सहायक आचार्य, वरिष्ठ सहायक आचार्य तथा आचार्य नियुक्त किया।

शीघ्र ही, कॉफी की दूकानों में, रेस्टोरेंटो में जहां पश्चिम से आये यात्री भोजन करते थे, विपश्यना शिविर की तारीखों की सूचना दी जाने लगी। कभी-कभी श्री गोयन्काजी का उल्लेख 'गायक गुरु' के रूप में किया जाता क्योंकि उनकी आवाज बहुत ही मधुर और गंभीर थी। इसी मधुर और गंभीर स्वर में बुद्ध द्वारा कही गाथाओं का तथा हिन्दी एवं राजस्थानी में स्वरचित दोहों का पाठ करते। कँपकँपाती सुबह में तथा देर शाम को ध्यान कक्ष के शांत वातावरण में उनकी आवाज हवा में गूंजती जो लोगों को आराम देती, मार्ग का निर्देशन करती तथा उत्साहित करती।

शिविर जब प्रारंभ होता, वे आकर बैठ जाते और शांति से तब तक प्रतीक्षा करते रहते जब तक कि साधक अपनी-अपनी जगह पर आसनों को ठीक से रख कर चुप नहीं हो जाते। तब वे बोलना प्रारंभ करते और कुछ ही क्षणों में उस टूटे-फूटे किराये पर लिए कक्ष का या हवादार तम्बू का कायाकल्प हो जाता और वे समय से अतीत हो जाते, जहां सभी अपने आंतरिक सत्य के मोहक अन्वेषण में लगे होते। श्री गोयन्काजी घंटों अपने साधकों के पास होते। वे जो भी करते सभी जीवंत होते – चाहे चांटिग हो, चाहें दिन में विपश्यना कैसे करनी है यह सिखाना हो, चाहे शाम का प्रवचन हो। धर्म ही उनके मुख से प्रवाहित होता।

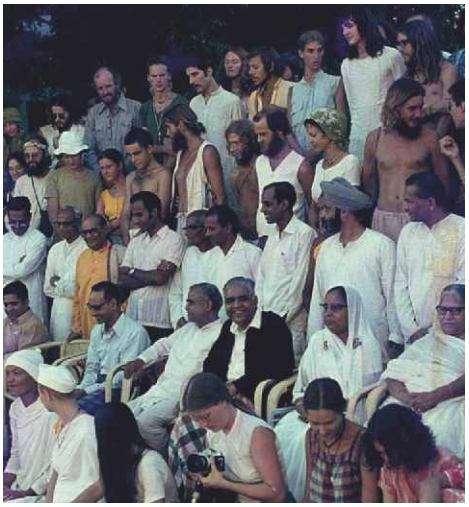

(दक्षिण भारत में चेन्नई-शिविर समापन के बाद साधकों के साथ पू. गुरुजी और माताजी)

प्रतिदिन रात को ९ बजे प्रोग्राम समाप्त होता। दिन का आरंभ ऊषा-पूर्व ही प्रारंभ हो जाता और पूरे दिन भर काम करके साधक थक जाते। लेकिन प्रायः सभी ध्यान-कक्ष में ही रहते। वे शाम को पूछे जाने वाले प्रश्नों के अवसर को खोना नहीं चाहते थे। या तो साधक पंक्तिबद्ध खड़े होते या श्री गोयन्काजी के आसन के पास झुंड बनाते। कुछ प्रश्नकर्ता तो स्पष्ट रूप से श्री गोयन्काजी को चुनौती देना चाहते और कुछ उनसे वाद-विवाद भी करना चाहते। कुछ अन्य ऐसे थे जो यथार्थ रूप से किंकर्त्तव्यविमूढ़ थे या अशांत थे। कुछ यह चाहते थे कि श्री गोयन्काजी उनकी दृष्टि को ही सही कहें। कुछ अन्य उनको ही गलत प्रमाणित करना चाहते थे। श्री गोयन्काजी मुस्कराते हुए, बड़े ही प्यार से, हँसते हुए एक-एक करके अक्सर सब के प्रश्नों के उत्तर देते, उससे निपटते। बाद में भले ही उन्हें उनके शब्द याद न रहें, लेकिन उन्हें लगता था कि उनको उत्तर मिल गया है।

शिविर के अंत में वे समापन भाषण देते और कुछ देर तक साधकों के साथ ध्यान करते। तब वे ध्यान कक्ष से हिंदी मे 'सबका मंगल हो' चांट करते हुए बाहर निकलते। धीरे-धीरे उनकी आवाज धीमी होती जाती और फिर शांत हो जाती। साधक भारत के किसी शहर के टूटे-फूटे कमरे में वापस लौट जाते, जहां खोमचे वाले अपने सामान बेचने के लिए हांक लगाते या कुत्ते भौंकते होते। वहां वे अपने दोस्तों या प्रेमिकाओं से मिलते, पत्र लिखते, पढ़ते या रेलगाडी पकड़ने आदि की आगे की योजनाएं बनाते।

लेकिन बहुत से साधकों में बहुत कुछ बहला-बदला दीखता। अब उनका जीवन पहले की तरह तो नहीं ही होगा।

ऋण चुकाने का उपाय

श्री गोयन्काजी अपने आचार्य सयाजी ऊ बा खिन को उपरोक्त सभी बातों की सूचना देते रहते। ऊ बा खिन को इनके पत्रों

को पढ़ने में बड़ी रुचि होती। एक शिविर में ३७ साधक बैठे और ऊ बा खिन ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा ३७ साधक अर्थात ३७ बोधिपक्षीय धर्म। बोधिपक्षीय धर्म पालि साहित्य में एक पारिभाषिक शब्द है। जब श्री गोयन्काजीने लिखा कि उन्होंने १०० साधकों का एक शिविर संचालित किया तब सयाजी बहुत ही प्रसन्न हुए। उस समय लोगों के मन में यह ख्याल भी नहीं आया होगा कि आगे चलकर यह शिविर छोटा समझा जायगा।

जनवरी १९७१ में श्री गोयन्काजी बर्मीज बौद्ध विहार, बोधगया में शिविर संचालन कर रहे थे। उस समय एक तार आया। सयाजी ऊ बा खिन अब इस दुनिया में नहीं रहे। श्री गोयन्काजी ने साधकों से कहा, "प्रकाश बुझ गया।" उनको सयाजी का अभाव खटका। लेकिन शीघ्र ही उन्होंने यह अनुभव किया कि सयाजी का सान्निध्य उन्हें पहले से कहीं अधिक प्राप्त है। उन्हें लगा मानो सयाजी ने भारत आकर उनका साथ देना प्रारंभ कर दिया है।

विपश्यना का शिविर लगाने के सिवाय अब और क्या करना था? उनके आचार्य ने उनकी सहायता तब की थी जब माईग्रेन से छुटकारा पाने का और कोई उपाय न था। ऊ बा खिन ने बड़े प्यार से उन्हें विपश्यना की विधि सिखायी और ऐसा प्रशिक्षण दिया ताकि वे स्वयं सिखा सकें। उन्होंने श्री गोयन्काजी को आचार्य के रूप में नियुक्त किया था और उनको एक मिशन देकर भारत भेजा था। वे इसी मिशन की सफलता के लिए जीवन पर्यंत काम करना चाहते थे। शिविर के प्रत्येक दिन प्रातःकाल की चांटिग में वे कहते थे :-

रोम रोम किरतग हुआ, ऋण न चुकाया जाय।
जीऊं जीवन धरम का, दुखियन बांटू धरम सुख, यह ही उचित उपाय॥

उन्होंने यही किया। भारत के सुदूर दक्षिण से हिमालय तक, पश्चिमी गुजरात एवं राजस्थान की मरुभूमि से बंगाल तक श्री गोयन्काजी अनवरत जाते रहे। प्राकृतिक दृश्य बदला, चेहरे बदले, उनमें भी परिवर्तन हुआ, वे बूढ़े हुए, लेकिन धर्मयात्रा जारी रही।

धम्मगिरि

प्रारंभिक कुछ वर्षों तक शिविर का स्थान सुनिश्चित नहीं था। कभी किसी आश्रम में, किसी विहार में, किसी गिरजाघर में, किसी स्कूल में, कभी धर्मशाला में, कभी छात्रावास में, कभी आरोग्य आश्रम में, जहां कहीं भी सस्ते दर पर निवास मिल जाता, वहीं शिविर लगते। हर जगह काम तो चल जाता, पर हर जगह कुछ न कुछ कमियां रह जातीं, असुविधाएं होतीं। ऐसे हर स्थान पर शिविर लगाने के पूर्व कुछ उपक्रम करने पड़ते, कुछ नया बनाना पड़ता और शिविर की समाप्ति पर उन्हें तोड़ना भी पड़ता। इसलिए ऐसे स्थान की खोज शुरू हुयी जो सिर्फ विपश्यना शिविर के लिए ही हो, जहां वर्ष भर शिविर ही लगते रहें।

१९७३ के अंत में श्री गोयन्काजी जब देवलाली का शिविर समाप्त करके मुंबई लौट रहे थे तब रास्ते में इगतपुरी में एक दूकानदार तथा म्यूनिसिपैलिटी के एक कर्मचारी ने श्री गोयन्काजी की कार को रोकने का संकेत दिया। शहर के बाहर उन्होंने कुछ संभावित स्थलों को देख रखा था जहां शिविर लगाया जा सकता था। उन्होंने श्री गोयन्काजी से उन स्थलों को देखने का अनुरोध किया। आधे मन से श्री गोयन्काजी तैयार हुए। कुछ समय पूर्व पैर की हड्डी टूट जाने के कारण उस पर प्लास्टर भी चढ़ा था, इसलिए ज्यादा देर न कर वे शीघ्र घर लौट जाना चाहते थे।

प्रथम दो स्थान जो देखे वे स्पष्टतः शिविर के लिए उपयुक्त नहीं थे। एक और देखना बाकी था। उनकी कार एक पगडंडी पर चलने लगी जो बहुत दिनों से इस्तेमाल नहीं हुयी थी। इस पगडंडी से वे एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर आये जहां बड़े-बड़े आम के पेड़ थे, जिनकी छाया उन पुराने बंगलों पर पड़ रही थी जो ब्रिटिश राज के समय बने थे। कुछ की हालत बेहद बुरी थी। वहां बकरियां चर रही थीं और एक बंगले से बकरियां बाहर निकलतीं और फिर उसमें घुस जाती थीं। इस पहाड़ी के पीछे एक खाली पहाड़ भी था।

श्री गोयन्काजी ने कुछ क्षणों के लिए अपनी आंखे बंद कर लीं। फिर कहा - "हां, यह योग्य स्थान है।" शीघ्र ही उस व्यापारी ने जो उनके साथ चल रहा था, इस भूमि को खरीदने की बात कही। आगे चलकर जो धम्मगिरि कहलाया, यह उसकी शुरुआत थी।

केंद्र का प्रारंभ सीधे-सादे ढंग से हुआ। पश्चिमी देशों के कुछ साधक ही यहां रहने लगे। उन्होंने श्री गोयन्काजी को लिखा कि यहां रहते हुए समय कैसे बिताया जाय? उन्होंने उत्तर दिया - "ध्यान करो, ध्यान करो, और ध्यान करो। अपने को साफ करो और केन्द्र को भी साफ करो।" उन लोगों ने काम करना शुरू किया। कुएं से पानी खींचते और ब्रश से साफ करते। जब उनको कुछ साफ जगह मिल गयी तब वे ६ से ८ घंटे तक वहां बैठते और ध्यान करते। शीघ्र ही कुछ और लोग आए, और तब निर्माण कार्य शुरू हुआ। अक्टूबर १९७६ में आधिकारिक रूप से धम्मगिरि का केन्द्र खुला।

(धम्मगिरि, इगतपुरी का प्रारंभिक पगोडा, १९७९)

यह बहुत खुशी का क्षण था, पर साथ ही कठिनाईभरा भी। जैसे अक्सर होता है, निर्माणकार्य में आमदनी से बहुत अधिक खर्च हो गया। ट्रस्ट को ठीकेदार को पैसे देने थे, पर ट्रस्ट असमर्थ था, उसके पास पैसे नहीं थे। उदाहरण स्वरूप, नये बने आचार्य-निवास के लिए भी पैसे देने के लिए कोष में राशि नहीं थी। जब श्री गोयन्काजी को इस बात का पता चला, उन्होंने उस निवास में रहना अस्वीकार कर दिया। आचार्य निवास में रहने के बजाय वे और उनकी पत्नी माताजी एक डॉरमिटरी में रहने चले गये, जहां नल और शौचालय की सुविधा नहीं थी। डॉरमिटरी से सटे एक स्थान को बांस की चटाई से घेर कर उनके लिए स्नान करने की व्यवस्था की गयी थी। जैसे और लोग जिस शौचालय का उपयोग करते वैसे ही वे लोग भी उसी शौचालय का उपयोग करते। छह महीनों तक धम्मगिरि पर शिविर चलते रहे और वे लोग इसी हालत में रहे, जब तक कि ट्रस्ट ने ठीकेदार को पैसे न दे दिये।

अन्ततः वहां की कोश-राशि बढ़ी, अधिक भवन बने और एक पगोडा का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ। वैसा ही पगोडा जैसा कि यांगों में सयाजी ऊ बा खिन के केन्द्र पर था। पश्चिमी देशों के स्वयं सेवक और भारतीय मजदूर कंधे से कंधा मिलाकर काम करते। बर्मिज विहार, बोधगया के निवासीय (रेसीडेंट) बरमी भिक्खु कलापूर्ण ढांचा और पलस्तर में सहायता करने के लिए आये। १९७९ के प्रारंभ में धम्मगिरि के पगोडा का विधिवत उद्घाटन हुआ। उस समय उपस्थित गण्यमान्यजनों में सयामा डा म्या त्विन

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

(जिन्होंने ऊ बा खिन के विपश्यना केन्द्र पर उनकी सहायता और साधकों की सेवा की थी।) और उनके पति ऊ छिट टिन थे (जिन्होंने ऊ बा खिन के साथ सरकारी कार्यालय में काम किया था।) इसके कुछ ही दिनों के बाद एक और महत्त्वपूर्ण घटना घटी। श्री गोयन्काजी हवाई जहाज से पहला शिविर संचालित करने यूरोप गये। जिस महिला ने १० वर्ष पहले श्री गोयन्काजी को अपने देश आने का निमंत्रण दिया था, उसको श्री गोयन्काजी की बातें याद थीं। अब उसने श्री गोयन्काजी से संपर्क साधा और योग टीचर्स के फ्रेंच फेडरेशन की ओर से निमंत्रण भेजा। ...

.... (**क्रमशः -- अगले अंक में**) *('विपस्सना न्यूजलेटर', अंतर्राष्ट्रीय संस्करण; अक्टूबर २२, २०१३ से साभार, अनुवाद- विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी)*

धम्मपुण्ण पुणे में बालशिविर शिक्षकों और धर्मसेवकों की कार्यशाला

२२ जनवरी को आर.सी.सी.सी. की **सायं ५ बजे** से **२६** की **सायं ५ बजे** तक। सी.सी.टी की २३ को ५ बजे से अंत तक। धर्मसेवकों की २४ की सायं ५ बजे से अंत तक। २६ को एक दिवसीय बालशिविर कार्यशाला अंत तक।

सयाजी ऊ बा खिन की पुण्यतिथि के अवसर पर पूज्य माताजी के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

19 जनवरी, 2014, **रविवार**, **समयः** प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** में। यहां **३ बजे दिवंगत गुरुदेव के रेकार्डेड प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं।** कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया **बिना बुकिंग कराये न आएं।**

बुकिंग संपर्क : फोन नं.: 022-28451170 / 022-33747501- Extn. 9, 022-33747543 / 33747544, **(फोन बुकिंग :** प्रातः **11** से सायं **5** तक, प्रतिदिन) **ईमेल Regn: oneday@globalpagoda.org**

Online Registration: www.oneday.globalpagoda.org

नव नियुक्तिया

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. Mr. Rob Bu rt, New Zeala nd
2-3. Dr. John Geraets & Ms. Karen Weston, New Zealand
4. Mrs. Paula McVicker, Austra lia

सहायक आचार्य

१. श्री दीपक नारखेडे, जलगांव
२. श्री विजय सिंह राजावत, मुंबई
३. श्री तक्षक पोद्दार, कोल्हापुर
४. श्री प्रवीण डागा, चेन्नई
५. श्री मोहन रेड्डी, रंगारेड्डी
६. श्री मारकंडेयुलू वेलामुरी, हैदराबाद
७. श्रीमती उर्मिला शर्मा, रेवा
8. Mr. Xavier Salva dor, Spain
9. Mrs. Nelly Paillar d, France
10. Mr. Yuval Noa h Harari, Israel
11. Mr.Farha d Rodpour Falati, Iran
12. Mrs. Florence Qia oling Fang, China
13. Ms. Jo Hsin Hsiao, Taiwa n
14. Mr. Galen Foster, Ca nada
15-16. Mr. Patrick Murphy & Mrs. Tracy Hudson, USA
17. Mr. Craig D. Miller , USA
18. Ms. Jane Mcbride, USA

बालशिविर शिक्षक

१-२. श्री त्रिलोक शंकर एवं. श्रीमती ममता शर्मा, जोधपुर
३-४. श्री रमेश चंद्र एवं श्रीमती अपर्णा श्रीवास्तव, रावतभाटा
५. श्री रतनलाल शर्मा, रावतभाट
६. श्रीमती प्रेमसखी सोनी, जोधपुर
७. कु. मुमताज खान, चूरू
८. श्रीमती स्नेहलता बौद्ध, चूरू
९. श्रीमती नीना कपूर, पटना
१०. श्रीमती कामिनी बोमजेन, दार्जीलिंग
११. श्रीमती रश्मि मंगल, अहमदाबाद
१२. श्री किरन साहू, औरंगाबाद
१३. श्रीमती मंजु डहाट, औरंगाबाद
१४. श्री मनोज खंडारे, औरंगाबाद
१५. श्रीमती किरोनकुमारी मिश्रा, "
१६. श्री डुशिंग कारभारी, औरंगाबाद
१७. श्री देवीदास हिवाले, औरंगाबाद
१८, श्रीमती रश्मि गोगटे, जालना
१९. श्री राजेंद्र रत्नपारखी, जालना
२०. श्री सुधीर बिरले, लातूर
२१. श्री राजेश पोखरीकर, नांदेड
22. Mrs. Corinna Shar rief, USA
23. Mrs. Ami Fletcher, U SA
24. Ms. Salina Gomez, USA
25. Mr.Pradeep Jonnalagadda, USA
26. Ms. Chloe Goode, USA
27-28. Mr. Praveen Krishnamurthy & Mrs. Afreen Ma lim, USA
29. Mr. Brian McNamara USA
30. Ms. Genevieve Herreria USA
31. Mrs. Stella Hill, USA
32. Mr. Deepak L akhi Dubai
33. Mrs. Algirmaa Ba ljinnyam, Mongolia
34.. Mrs. Burnee T sendjav, Mongolia
35. Mrs. Oyuna E rdene, Mongolia
36. Mrs. Tsolmon Natsag, Mongolia
37. Mrs. Baya njargal Gotsoo, Mongolia
38. Mrs. Tsogzolmaa Namchin, Mongolia
39. Ms. Khaing Than Oo, My anmar
40. M. May Thet Htar, " **41**. Mr. Win Maung , " **42**. Ms. Su Hlaing Aung,"
43. Ms. Mu Mu Soe, Myanmar
44. Mr. U Ohn Pe Myint, Mya nmar

दोहे धर्म के

सद्गुरु की करुणा जगी, दिया धर्म का सार।
संप्रदाय के बोझ का, उतरा सिर से भार॥
धन्य! धन्य! गुरुवर मिले, ऐसे संत सुजान।
छूटी मिथ्या कल्पना, छूटा मिथ्या ज्ञान॥
गुरुवर! अंतरजगत में, जगी सत्य की ज्योत।
हुआ उजाला, धर्म से, अंतस ओतप्रोत॥
काम-क्रोध की बाढ़ में, डूब रहा मँझधार।
दिया सहारा धरम का, गुरुवर लिया उबार॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड

८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email:arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

जदि सतगुरु मिलतो नहीं, धरम गंग रै तीर।
तो बस गंगा पूजतो, कदे न पीतो नीर॥
केवल होती धरम री, चरचा और बखाण।
मिनख जमारो बीततो, प्यासा रैता प्राण॥
मिथ्या कल्पित ग्यान स्यूं, करतो बाद-बिवाद।
गुरुवर बिन चखतो कठै, सत्य धरम रो स्वाद॥
बिन सतगुरु मिलतो नहीं, पावन धरम प्रकास।
मोह निसा कटती नहीं, ना कटता भवपास॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी

सर्वो स्टॉकिस्ट - इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६, अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: **morolium_jal@yahoo.co.in**
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2557, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 17 दिसंबर, 2013**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org